22 April - M.F.A. II (Theory Course II) 20

Sub- History of Indian Sculpture - 2002T)

2. चोल काल (900-1150 ई०)

तंजौर मे निर्मित 'वृहदीश्वर मन्दिर' 1000 ई० के आसपास प्रतापी चोल सम्राट राजराजा द्वारा बनवाये गये। इसी कारण ये राज-राजेश्वर मन्दिर के नाम से भी पुकारे जाते हैं। इस मन्दिर मे एक विमान अर्द्धमण्डप और एक महामण्डप और सामने विशाल नन्दीमण्डप भी है। पूर्वी द्वार पर एक गोपुरम है। इस मन्दिर का शिखर 50 फुट ऊचे वर्गाकार आधार के ऊपर है। उत्तरोत्तर छोटा होता गया। यह 190 फीट ऊचा है। और 13 खण्डों वाला है। गर्भगृह मे विशालता भव्यता और कलात्मक सौन्दर्य की वजह से दाक्षिण भारत के सर्वश्रेष्ट मंदिरो मे गिना जाता है।

चोल काल मे निर्मित दूसरा मन्दिर चोल नरेश राजेन्द्र प्रथम ने 1025 ई० मे 'गंगैकोंडचोलपुरम' मे बनवाया था। इसमे 150 स्तम्भ है व इसकी ऊचाई 186 फीट है।

वृहदीश्वर मन्दिर 500 फीट लम्बे और 250 चौडे प्रांगण मे स्थित है। इस प्रांगण के सामने 250 फीट वर्गाकार का एक दूसरा आंगन है। ~~जो मुख्य~~

मूर्तिशिल्प - चोल राजाओ ने दाक्षिण भारत की कला को कुछ महान कृतियां निर्मित करने का सुअवसर और संरक्षण प्रदान किया जो मन्दिर निर्मित हुए उनमे नटराज शिव, गणेश चण्डिकेश अप्सरायें, गण, यक्ष राक्षस, तथा पौराणिक पात्र व कथानक उत्कीर्ण हैं।

नटराज शिव की सर्वोत्तम मूर्तियो मे नागेश्वर मन्दिर तथा तंजौर तथा गंगैकोण्डचोलपुरम के वृहदीश्वर मन्दिर से प्राप्त मूर्तियां उल्लेखनीय शिव की नृत्यमुद्रा मे सृष्टि जीवन की गतिशीलता तथा लयात्मकता का सन्तुलन भी व्यक्त होता है।

चिदम्बरम का नटराज मन्दिर तामिलनाड के दाक्षिण अर्काट जिले मे स्थित है। कहा जाता है। कि इस मन्दिर की कनक सभा को 10 वीं शताब्दी मे चोल शासक परान्तक प्रथम ने सोने से अलंकृत करवाया था। मुख्य मण्डप 1000 स्तम्भों पर

Scanned with CamScanner

मन्दिर का प्रांगण विशाल व चार गोपुर द्वार वाला है। उत्तरी गोपुरम 16वी शताब्दी में विजयनगर के नरेश कृष्ण देव राय ने बनवाया था। शिव की नृत्यमुद्रा में स्पष्ट जीवन की गतिशीलता तथा लयात्मकता का सन्तुलन अभिव्यक्त होता है। सामान्यतः बायाँ पैर नृत्य मुद्रा में उठा हुआ तथा हाथों की विभिन्न नृत्य मुद्राएं बनायी गयी हैं। ज्वालाओं जैसी बिखरी हुई केशराशि, अग्निशिखाओं से सज्जित आभामंडल, त्रिनेत्र, दो हाथों में अग्नि तथा डमरु शिव की उग्रता को प्रदर्शित करते हैं। कभी-कभी शिव का एक हाथ अभयमुद्रा में है।

चोल काल की पाषाण मूर्तियां विकालकाय नहीं हैं। कथानकों को छोटे आकार के फलकों पर उत्कीर्ण है। शिव पुराण, भागवत, देवीभगवत, रामायण के विभिन्न प्रसंगों को उकेरा है। चोल कला में अर्द्धदेवों नागों, गन्धर्वो विद्याधरों आदि की मूर्तियों का उपयोग मन्दिर पर अलंकरण के लिए किया गया है। चोल कालीन मन्दिरों में शार्दुल और उड़ने वाले घोड़ों का अंकन अत्यन्त सजीव हुआ है।

गोमतेश्वर बाहुबली मैसूर के निकट श्रवणबेलगोला में स्थापित प्रतिमा चोल काल की एक विशिष्ट मूर्ति है। यह 56 फीट ऊँची है। तथा काले पत्थर की एक चट्टान को काटकर उत्कीर्ण की गयी है। यह एक पहाड़ी पर स्थित है। यह जैन धर्म का प्रसिद्ध तीर्थस्थल है।

डॉ० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग

Scanned with CamScanner